साक्षर भारत मिशन 2012

हमारी भूमिका

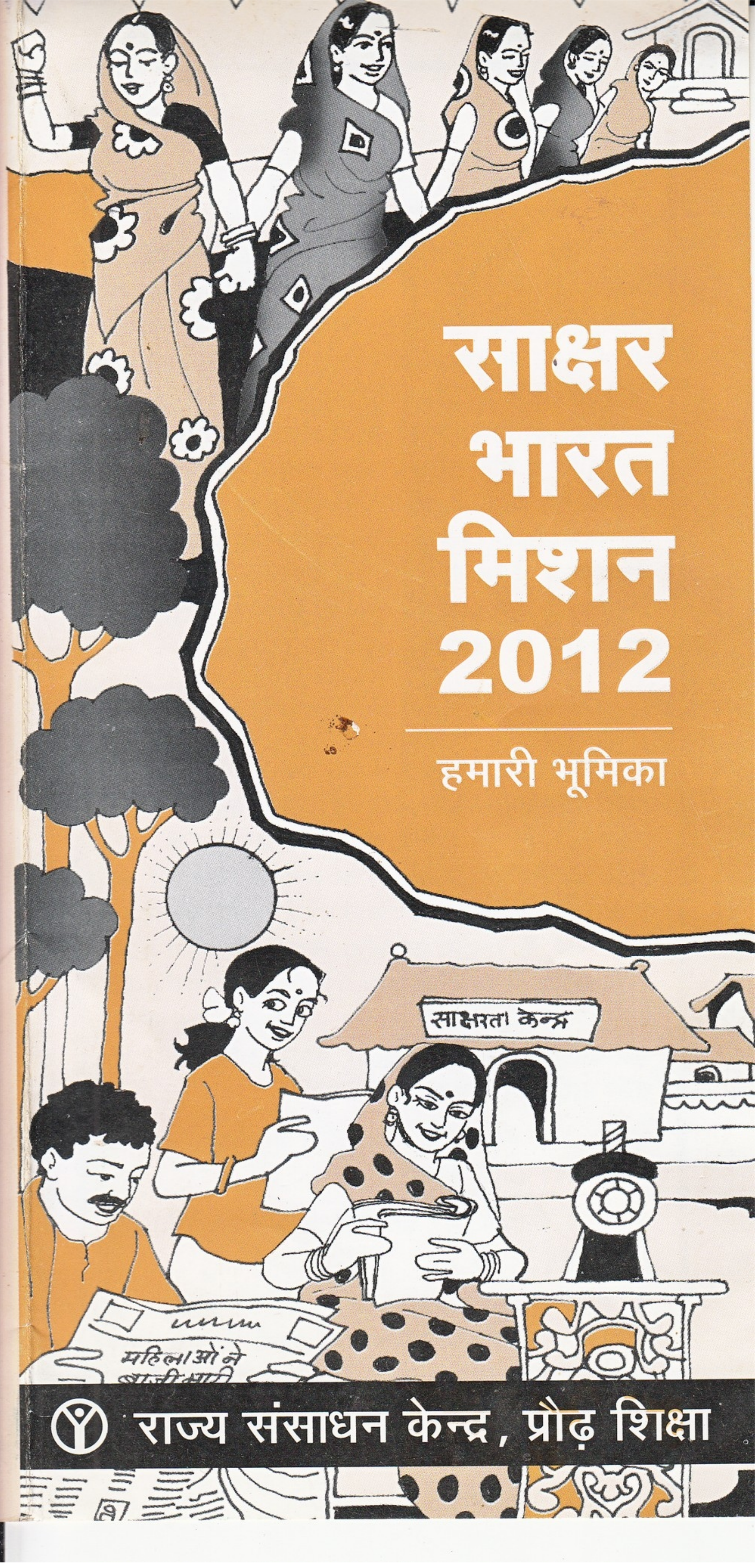

राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा

साक्षर भारत मिशन 2012
हमारी भूमिका

हमारे सर्वांगीण विकास में पढ़ाई–लिखाई के महत्व को हम नकार नहीं सकते हैं। पढ़ाई–लिखाई की प्रक्रिया जहाँ एक ओर हमें ज्ञान व सूचना के विस्तृत संसार से जोड़ती है वहीं दूसरी ओर यह प्रक्रिया हमारी समझ को भी विकसित करती है तथा दुनिया और जीवन में घट रही घटनाओं का विश्लेषण करने की क्षमता प्रदान करती है। इस दृष्टि से यदि हम हमारे देश में चल रही विकास की प्रक्रिया को देखें तो जीवन की बुनियादी सुविधाओं से वंचित लोगों के विकास के परिप्रेक्ष्य में कम से कम यह सहमति तो हो सकती है, कि देश में रह रहे प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम प्राथमिक स्तर के साक्षरता कौशलों से वंचित नहीं होना चाहिए।

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन

विकसित मानव समाज के परिप्रेक्ष्य में पढ़ाई–लिखाई के महत्व को सदैव रेखांकित किया गया है। इसीलिए हमारे देश में भी स्वतंत्रता प्राप्ति के बहुत पहले से किसी न किसी स्तर पर असाक्षर व्यक्तियों को साक्षर करने के प्रयास किए जाते रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर पर सन् 1988 में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की स्थापना के साथ ही देश में 15 से 35 आयु वर्ग के असाक्षर व्यक्तियों को कार्यात्मक रूप से साक्षर बनाने के सुसंगठित, सुव्यवस्थित तथा सुनियोजित प्रयास प्राथमिकता के साथ प्रारंभ कर दिए गए।

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन द्वारा कार्यात्मक साक्षरता का अर्थ यह बतलाया गया :

- पढ़ने–लिखने और सामान्य गणित में आत्मनिर्भरता आना।
- अपनी गिरी हुई हालत के कारणों का पता लगाना तथा संगठित होकर विकास के कार्यों में भाग लेकर अपनी दशा सुधारने की कोशिश करना।

- अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार लाने हेतु नए हुनर सीखना या सीखे हुए हुनर में प्रवीण होना।
- राष्ट्रीय एकता, पर्यावरण का बचाव, महिला–पुरुष समानता, छोटा परिवार जैसे सामाजिक मूल्यों के संदेशों को अच्छी तरह से समझना तथा उनका पालन करने की ओर प्रेरित होना।

इन उद्देश्यों के साथ देश में 15 से 35 आयु वर्ग के असाक्षर स्त्री–पुरूषों को साक्षर बनाने हेतु विशेष प्रयास किए गए तथा लाखों ऊर्जावान युवक–युवतियों ने साक्षरता गतिविधियों से विभिन्न स्तरों पर जुड़कर कठोर श्रम किया तथा असाक्षरों को साक्षर करने में उल्लेखनीय सफलता पाई।

देश में साक्षरता गतिविधियों के संचालन से जहाँ एक ओर असाक्षर लोग साक्षर बने वहीं दूसरी ओर साक्षरता गतिविधियों ने लोगों को जागरूक तथा संगठित करने का भी काम किया। इस जागरूकता तथा संगठन में पूर्व से साक्षर तथा अन्य पढ़े–लिखे व्यक्तियों की भी सहभागिता सुनिश्चित हो पाई। फलस्वरूप देश के विभिन्न हिस्सों में इस नव जाग्रत समाज में चेतना की व्यापक लहर देखी गई। प्राथमिक शालाओं में विद्यार्थियों, खासकर लड़कियों की संख्या में इजाफा हुआ, महिलाओं की गतिशीलता में वृद्धि हुई, स्थानीय स्तर की समस्याओं के समाधान हेतु लोगों ने संगठित प्रयास किए साथ ही ग्राम स्तर तक पुस्तकालयों की स्थापना के जरिए एक शैक्षणिक वातावरण निर्मित करने की कोशिश की गई।

मध्यप्रदेश में साक्षरता

हमारे प्रदेश में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की स्थापना के बाद 90 के दशक में सभी जिलों में सम्पूर्ण साक्षरता अभियान संचालित किया गया है। बाद के वर्षो में पढ़ना–बढ़ना आन्दोलन, महिला पढ़ना–बढ़ना आन्दोलन तथा विशेष पढ़ना–बढ़ना आन्दोलन के रूप में साक्षरता गतिविधियाँ संचालित की गईं। मध्यप्रदेश में यदि हम सन् 1991 तथा 2001 की जनगणना में 15 से 35 आयु वर्ग के साक्षर व्यक्तियों

की तुलना करें तो यह स्थिति सामने आती है –

वर्ष	पुरुष साक्षरता दर	महिला साक्षरता दर
1991	58.54%	29.35%
2001	76.80%	50.28%

मध्यप्रदेश में जनगणना 2001 की रिपोर्ट के अनुसार 90 के दशक में साक्षरता दर में 20% की उल्लेखनीय वृद्धि हुई जबकि 80 के दशक में यह वृद्धि 10% थी।

साक्षर भारत मिशन 2012

जैसा कि आंकड़े प्रदर्शित करते हैं, अभी भी हम साक्षरता के मामले में संतोषजनक स्थिति में नहीं हैं। विशेषकर प्रदेश में 15 तथा 15 से अधिक आयु वर्ग की महिलाओं में साक्षरता की स्थिति अभी भी काफी कम है। पूर्व में संचालित साक्षरता गतिविधियों की सफलता को जीवंत रखने के लिए तथा वर्तमान में मौजूद 15 तथा 15 से अधिक आयु वर्ग के असाक्षर महिला–पुरुषों को साक्षर बनाने के लिए पुनः समन्वित प्रयासों की अत्यधिक आवश्यकता है। इसीलिए भारत सरकार द्वारा 8 सितम्बर 2009, अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर, ''साक्षर भारत मिशन 2012'' का शुभारंभ किया जा रहा है। यह प्रयास इस आशा के साथ किया जा रहा है कि सन् 2012 तक हम देश में 15 वर्ष तथा 15 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के महिला–पुरुषों में कम से कम 80 प्रतिशत साक्षरता हासिल करने का लक्ष्य प्राप्त कर सकें। साथ ही महिला तथा पुरुषों की साक्षरता के अंतर को कम से कम 10% तक ला सकें।

मिशन के लक्ष्य

'साक्षर भारत मिशन 2012' के लक्ष्य इस प्रकार निर्धारित किए गए हैं –

- 15 वर्ष तथा 15 वर्ष से अधिक आयु समूह के असाक्षर महिला–पुरुषों में 80% साक्षरता दर हासिल करना।

- महिला–पुरुष के मध्य साक्षरता की दृष्टि से विद्यमान अंतर को कम करते हुए कम से कम 10% तक लाने का प्रयास करना, अर्थात् महिलाओं की साक्षरता हेतु प्राथमिकता से कार्य करना।
- साक्षरता तथा विकास के परिप्रेक्ष्य में समाज में व्याप्त क्षेत्रीय, सामाजिक तथा जेण्डर सम्बन्धी विषमताओं को कम करने का प्रयास करना।

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ग्रामीण महिला, अनुसूचित जाति तथा जनजाति एवं अल्पसंख्यक, अन्य वंचित वर्ग तथा किशोर वर्ग के युवक–युवतियों पर विशेष ध्यान केन्द्रित करना पड़ेगा। साथ ही कम साक्षरता दर वाले जिले एवं आदिवासी बहुल क्षेत्रों में प्राथमिकता के साथ कार्य करना होगा।

मिशन के उद्देश्य

साक्षर भारत मिशन 2012 के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कुछ उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं जो इस प्रकार हैं –

- 15 तथा अधिक आयु वर्ग के स्त्री–पुरूषों को कार्यात्मक रूप से साक्षर करना।
- नवसाक्षरों को उनके द्वारा प्राप्त बुनियादी साक्षरता से आगे पढ़कर औपचारिक शिक्षा के समकक्ष पहुँचने हेतु अवसर प्रदान करना।
- अपने जीवन की दशाओं में सुधार करने हेतु तथा अपनी कमाई में वृद्धि करने हेतु नवसाक्षरों को विभिन्न कौशल प्राप्त करने में सहायता करना।
- आजीवन सीखने के अवसर मुहैय्या करा कर सीखने की ओर अग्रसर समाज की स्थापना करना।

हमारी भूमिका

सम्पूर्ण राष्ट्र में, 8 सितम्बर 2009, अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर 'साक्षर भारत, मिशन 2012' का शुभारंभ किया जा रहा है। यह एक महाअभियान है तथा इसके उद्देश्यों की पूर्ति तभी हो सकती है जब साक्षर समुदाय इस कार्य में अपनी सहभागिता सुनिश्चित

करे। हम पढ़े–लिखे लोग, प्रदेश में साक्षरता गतिविधियों के संचालन में रचनात्मक सहयोग कर सकते हैं। यह सहयोग किस प्रकार किया जा सकता है, इस हेतु कुछ सुझाव इस प्रकार हैं–

- साक्षरता के पक्ष में सकारात्मक वातावरण निर्मित करने हेतु, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आलेख लिख सकते हैं। यदि रुचि हो तो प्रदर्शन कलाओं जैसे– नाटक, नुक्कड़ नाटक, रेडियो रूपक, लोकगीत, कठपुतली प्रदर्शन आदि के माध्यम से प्रेरक वातावरण निर्मित करने में सहायता कर सकते हैं।
- अपनी जानकारी अथवा परिचय के किसी असाक्षर को साक्षर कर सकते हैं।
- साक्षरता कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षण कार्य कर सकते हैं तथा असाक्षरों को साक्षर करने में सहयोग प्रदान कर सकते हैं।
- असाक्षरों को साक्षर होने हेतु तथा साक्षरों को साक्षरता कार्यक्रम से जुड़ने हेतु यथासंभव प्रेरित कर सकते हैं।

यदि आप साक्षरता कार्यक्रम के बारे में अधिक से अधिक जानेंगे, तभी आप देश के विकास में इसके महत्व को समझ पाएंगे, साथ ही इस कार्यक्रम के परिप्रेक्ष्य में अपने दायित्व को भी समझ पाएंगे। अतः प्रयास कीजिए कि आप अपने आसपास संचालित हो रहे साक्षरता कार्यक्रम को अधिक अच्छी तरह से समझ सकें और इसमें सक्रिय योगदान दे सकें। आप सभी के सार्थक प्रयासों से ही 'साक्षर भारत, मिशन 2012' सफल हो सकेगा।

- अखिल दुबे

पूर्ण विवरण हेतु सम्पर्क करें

राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा,
भारतीय ग्रामीण महिला संघ, म.प्र.

महालक्ष्मी नगर, सेक्टर आर, इंदौर - 452010 (म.प्र.)
फोन : 91-731-2551917, 2574104, फैक्स : 91-731-2551573
E-Mail: srcmpindore@gmail.com
web : www.srcindore.org

मुद्रक : गोयनका ऑफसेट प्रिन्टर्स प्रा लि, इन्दौर म. प्र. 0731 2412800

संस्करण – प्रथम, सितम्बर 2009 प्रतियाँ – 2000